डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन

साहित्य रत्नाकर
104A/118, रामबाग कानपुर–12
द्वारा प्रकाशित
प्रथम संस्करण 1990
स्वत्वाधिकार लेखकाधीन
मूल्य–160.00 रुपये
सुमन प्रिन्टर्स पनकी, कानपुर
द्वारा मुद्रित
भुईन बुक बाइन्डर द्वारा बाइन्डिंग

Dr. Shiv Mangal Singh 'Suman' Ki
Kritiyon Ka Samikchhatmak Adyayan
By Dr. Ravindra Nath Misra.

अनुक्रमणिका

भूमिका 7–9

आभार प्रदर्शन 10–16

(1) पहला अध्याय:— 1–30

1. परिचय, व्यक्तित्व, परिस्थितियाँ और कृतित्व

(क) परिचय:–जन्म, पिता और परिवार, शिक्षा एवं कार्य-क्षेत्र, सम्मान एवं पुरस्कार, अध्यक्ष, प्रकाशित–ग्रन्थ, मुद्रणाधी ग्रन्थ, यात्रा वर्णन ।

(ख) व्यक्तित्व:–वाह्य पक्ष आन्तरिक पक्ष, स्वभाव, संस्कार और रुचि, कुशल वक्ता, उपाध्याय या गुरू, प्रशासक, मानवीय पहलू ।

(ग) परिस्थितियाँ:–राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ।

(घ) कृतित्व:— 1. हिल्लोल
2. जीवन के गान
3. प्रलय–सृजन
4. विश्वास बढ़ता ही गया
5. पर आँखें नहीं भरीं
6. विन्ध्य हिमालय
7. मिट्टी की बारात
8. वाणी की व्यथा
9. प्रकृति-पुरुष कालिदास [नाटक]

(ङ) काव्य संकलन :–
1. सप्तपर्णा
2. मधुछन्दा
3. नविका
4. अनुपूर्वा
5. आधुनिक काव्य धारा
6. छायावादोत्तर काव्य धारा

(2) दूसरा अध्याय:— 31–88

1. 'सुमन' जी की प्रगतिवादी कविताएँ :–

(क) प्रगतिवादी चिन्तन:– नाम और सीमाए, प्रगतिशील लेखक संघ का घोषणा-पत्र, प्रगतिशील लेखक संघों का अधिवेशन, प्रथम अधिवेशन, द्वितीय अधिवेशन, तृतीय अधिवेशन, चतुर्थ अधिवेशन, पंचम और षष्ठ अधिवेशन।

(ख) प्रगतिवादी आन्दोलन का काल विभाजन:– प्रथम चरण द्वितीय चरण, तृतीय चरण, आधुनिकता एवं समकालीन की व्याख्या, प्रगतिवादी आन्दोलन की उपलब्धियाँ और आक्षेप।

(ग) 'सुमन' की प्रगतिवादी कविताओं का प्रवृत्ति संगत विवेचन:–

1. जगत की उत्पत्ति संबन्धी धारणा।
2. नाश एवं निर्माण संबंधी विचारधारा।
3. रूढ़ परम्पराओं तथा वर्ण-वर्ग-वैषम्य का खण्डन।
4. अर्थाधार एवं कला।
5. अर्थाधार और सामाजिक चेतना।
6. रूस और उसकी साम्यवादी शासन-व्यवस्था की प्रशंसा।
7. साम्राज्यवाद, सामन्तवाद और पूँजीवाद के विरुद्ध विद्रोह की भावना।
8. शोषितों के प्रति सहानुभूति और जागृति का सन्देश।
9. सामयिक समस्याओं का विवेचन।
   (क) बंगाल का अकाल।
   (ख) महात्मा गान्धी की हत्या।
   (ग) साहित्यकारों की प्रशस्तियाँ।
10. आस्था और विश्वास का स्वर।

'निष्कर्ष'

(3) तीसरा अध्याय :— 89–129

1. 'सुमन' जी के काव्य अभिव्यक्ति सामाजिक चेतना।
   (क) सामाजिक पृष्ठभूमि, यांत्रिक सभ्यता का प्रवेश, मानववादी दृष्टि, सामाजिक परिस्थितियाँ, निम्न मध्य वर्ग, पूँजीपति वर्ग, वर्ग-विषमता, समकालीन समाज और साहित्य।
   (ख) 'सुमन' जी की समाजवादी कविताओं का प्रवृत्ति सगत विवेचन–
      1. वर्तमान समाज व्यवस्था के प्रति असन्तोष।

2. सामाजिक विषमता के चित्र ।
3. समाज का यथार्थवादी चित्रण ।
4. नारीपरक दृष्टिकोण ।
5. भावी समाज की कल्पना ।
6. मानवतावादी विचार धारा ।
7. सामान्य मानव के महत्व की स्थापना ।
8. मानव शक्ति में विश्वास ।
'निष्कर्ष' ।

(4) चौथा अध्याय :– 130–170

1. सुमन जी के काव्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक चेतना :–
(क) संस्कृत शब्द का अर्थ और महत्व, भारतीय संस्कृति का स्वरूप, आधुनिक भारतीय संस्कृति और उसका क्षेत्र, सभ्यता और संस्कृति, साहित्य और संस्कृति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ ।
(ख) 'सुमन' जी की सांस्कृतिक कविताओं का प्रवृत्ति-संगत विवेचन :–
1. समन्वय भाव ।
2. वाह्य और आन्तरिक शुद्धि ।
3. संस्कार
4. अहिंसा, करुणा, मैत्री और विनय ।
5. उत्सव-प्रियता ।
6. विश्व-बन्धुत्व ।
(ग) प्रगतिशील और असाम्प्रदायिक संस्कृति '
(क) अभिजात्य वर्ग की संस्कृति ।
(ख) ग्रामीण-संस्कृति ।
(ग) गांधीवादी विचार-दर्शन ।
(घ) मानवतावादी विचार-दर्शन ।
(ङ) समाजवादी विचार-दर्शन ।
'निष्कर्ष'

(5) पांचवा अध्याय :– 171–210

सुमन जी के काव्य प्रेमभाव ।
(क) प्रेम का अर्थ, प्रेम में रूप, प्रेम और साहित्य, प्रेम: सत्यम् शिवम् और सुदरम्, प्रेम और रस ।

(ख) 'सुमन' जी की कविताओं में प्रेम-भावना के विभिन्न-रूप ।

1. नारी प्रेम
2. शोषितों के प्रति प्रेम
3. प्रकृति-प्रेम
4. राष्ट्र-प्रेम
5. विश्व-प्रेम
6. रहस्यवादी-प्रेम

'निष्कर्ष'

(6) छठा अध्याय :- 211-243

गीति काव्य की कसौटी पर 'सुमन' के गीत ।

1. गीति का स्वरूप और विकाश :

(क) स्वरूप:-शब्द परिचय, परिभाषा, लक्षण, वर्गीकरण ।

(ख) विकास :- 1. आदिकाल
2. भक्तिकाल
3. आधुनिक काल ।

2. 'सुमन' जी के काव्यों में गीति के प्रकार-

1. वैयक्तिक गीत
2. सामाजिक गीत
3. रहस्यवादी गीत
4. लोक गीत
5. राष्ट्रीय गीत

3. गीतकार 'सुमन'

'निष्कर्ष'

(7) सातवां अध्याय :- 244-273

'सुमन' जी के काव्य में प्रकृति-सौन्दर्य :

1. प्रकृति और मानव का सम्बन्ध ।
2. प्रकृति और काव्य का सम्बन्ध ।
3. 'सुमन' के काव्यों में ऋतुओं का चित्रण —

(क) वर्षा ऋतु का वर्णन ।
(ख) शरद ऋतु का वर्णन ।
(ग) शिशिर ऋतु का वर्णन ।
(घ) वसंत ऋतु का वर्णन ।
(ङ) ग्रीष्म ऋतु का वर्णन ।

4. प्रकृति-चित्रण के विभिन्न रूप:—
1. आलम्बन के रूप में प्रकृति-चित्रण
2. पृष्ठभूमि के रूप में प्रकृति-चित्रण
3. उद्दीपन के रूप में प्रकृति चित्रण
4. संदेश वाहक के रूप में प्रकृति चित्रण
5. अलंकार के रूप में प्रकृति चित्रण
6. मानवीयकरण के रूप में प्रकृति चित्रण
7, प्रतीक के रूप में प्रकृति चित्रण
'निष्कर्ष'

(8) आठवाँ अध्याय:- 274–310
'सुमन' जी के काव्यों में भाषिक सर्जनात्मकता :
1. छन्द विधान:—मात्रिक छन्द, लयात्मक–मुक्त छन्द, लयहीन मुक्त छन्द, गेय छन्द ।
2. अलंकार विधान:—शब्दालंकार और अर्थालंकार ।
3. शैली विधान :–उद्बोधनात्मक, शैली व्यंग्यात्मक–शैली, वर्णनात्मक शैली, संवादात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, लोकगीत शैली ।
4. गुण विधान :—ओज गुण की प्रधानता, माधुर्य गुण की प्रधानता, प्रसाद गुण की प्रधानता ।
5. शब्द शक्ति एवं भाषा :–(क) अभिधा, (ख) लक्षण, (ग) व्यंजना
6. बिम्ब–विधान .–
'निष्कर्ष'

(9) नवाँ अध्याय :– 311–316
उपसंहार ।

बायोडाटा–डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन'..... 317–319

सन्दर्भ ग्रंथ सूची..... 320–324